टिप्पणी

26

कंपनी : एक परिचय

आपके सामने संगठन के ऐसे नाम अवश्य आये होंगे जिनके पीछे लिमिटेड (लि.) शब्द लगे होते हैं जैसे कि हिंदुस्तान मोट्र्स लि. अथवा हिंदुस्तान एयरोनैटिक्स लि. क्या आपने कभी सोचा है कि इसका क्या अर्थ है? संगठन के नाम के साथ यदि लि. शब्द लगा हो तो यह दर्शाता है कि यह संगठन का वह स्वरूप है जो एकल स्वामित्व एवं साझेदारी से भिन्न हैं। इन्हें संयुक्त पूँजी कंपनी कहते हैं।

आप जानते हैं कि एकल स्वामित्व एवं साझेदारी संगठन व्यवसाय के बड़े पैमाने एवं बढ़ती आर्थिक क्रियाओं के कारण बढ़ती भारी पूँजी एवं प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं थे। इन संगठनों के स्वामी/स्वामियों का दायित्व असीमित होता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए व्यवसाय संगठन का एक नया स्वरूप अस्तित्व में आया जिसे 'कंपनी' कहते हैं।

इस पाठ में आप कंपनी, इसकी विशेषताओं एवं अंशों के निर्गमन के द्वारा पूँजी जुटाने की पद्धतियों को पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- व्यवसाय संगठन के स्वरूप के रूप में कंपनी का अर्थ बता सकेंगे;
- कंपनी की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- कंपनी के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- सार्वजनिक एवं निजी कंपनी में अंतर बता सकेंगे;
- अंशों के विभिन्न प्रकारों को समझा सकेंगे;

टिप्पणी

- समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंशों में अंतर कर सकेंगे;
- अंश पूँजी के प्रकारों को समझा सकेंगे।

26.1 कंपनी–अर्थ एवं विशेषताएँ

कंपनी कुछ व्यक्तियों का एक एच्छिक संगठन है जिसका निर्माण लाभ कमाने के लिए किसी व्यवसाय को चलाने अथवा गैर–लाभ उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह व्यक्ति इसके अंशों का क्रय कर इसकी पूँजी में अपना योगदान देते हैं जो कि अंशों में विभक्त होती है। कंपनी कुछ व्यक्तियों का संगठन है जिसका पंजीयन कंपनी अधिनियम के अंतर्गत अनिवार्य है। कंपनी की पूंजी अंशों में विभक्त होती है जो सदस्यों द्वारा व्यवसाय में लाभ कमाने के उद्देश्य से लगाई जाती है।

> *"कंपनी अधिनियम 1956 के अनुसार एक कंपनी वह है जिसका निर्माण एवं पंजीयन कंपनी अधिनियम के अंतर्गत किया गया है अथवा विद्यमान कम्पनी जिसका पंजीयन अन्य किसी अधिनियम के अंतर्गत किया गया है।"*

कंपनी की विशेषताएँ

कंपनी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- **कृत्रिम वैधानिक व्यक्ति :** कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है जिसकी रचना केवल कानून के द्वारा होती है। इसे लगभग वे सब अधिकार तथा शक्तियाँ प्राप्त हैं जो एक प्राकृतिक व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। यह प्रंसविदे कर सकती है। यह अपने नाम में मुकदमा चला सकती है तथा अन्य भी इस पर मुकदमा चला सकते हैं।
- **समामेलित संस्था :** एक कंपनी का कंपनी अधिनियम के अंतर्गत पंजीयन अनिवार्य है। इसके परिणाम स्वरूप ही इसको कंपनी–व्यक्तित्व प्राप्त होता है। इसकी अपनी अलग पहचान होती है। यद्यपि इसकी पूँजी इसके सदस्यों, जिन्हें अंशधारी कहते हैं, के द्वारा जुटाई जाती है, फिर भी इस पूँजी में से खरीदी गई संपत्ति कंपनी की होती है न कि अंशधारियों की।
- **पूँजी का अंशों में विभाजन :** कंपनी की पूँजी अंशों में विभक्त होती है। अंश कंपनी की पूँजी की अविभाजित इकाई होती है। कंपनी के अंशों का अंकित मूल्य होता है जो कि सामान्यतः ₹ 10, ₹ 25 अथवा ₹ 100 होता है।
- **हस्तांतरणीय अंश :** कंपनी के अंश आसानी से हस्तांतरणीय हैं। अंशों का स्टाक बाजार में क्रय–विक्रय किया जा सकता है।

टिप्पणी

- **स्थाई अस्तित्व :** कंपनी का अस्तित्व अपने अंशधारियों से स्वतंत्र एवं अलग होता है। मृत्यु अथवा दिवालिया हो जाने के कारण इसकी सदस्यता में परिवर्तन का इसके अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तथा यह चलती रहती है।
- **सीमित दायित्व :** कंपनी के अंशधारियों का दायित्व उनके द्वारा खरीदे हुए अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित होता है। किसी भी अंशधारी को उसके पास रखे अंशों के अंकित मूल्य से अधिक का भुगतान करने के लिए नहीं कहा जा सकता। अधिक से अधिक उनसे अंशों के अयाचित मूल्य का भुगतान करने के लिए कहा जा सकता है।
- **प्रतिनिधिक प्रबंध :** अंशधारियों की संख्या इतनी अधिक होती है तथा बिखरी हुई होती है कि वह सब मिलकर कंपनी के कार्यों का प्रबंध नहीं कर सकते। इसीलिए कंपनी के प्रबंधन एवं संचालन के लिए वह अपने में से ही कुछ व्यक्तियों को चुन लेते हैं। अंशधारियों के यह चुने हुए प्रतिनिधि कंपनी के निदेशक कहलाते हैं तथा सम्मिलित रूप से इन्हें निदेशक मंडल कहते हैं।
- **सार्वमुद्रा (Common Seal) :** सार्वमुद्रा किसी कंपनी का अधिकृत हस्ताक्षर है। किसी भी दस्तावेज पर यदि कंपनी की सार्वमुद्रा अंकित है तो इससे कंपनी कानूनी रूप से बाध्य हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 26.1

I. कंपनी की विशेषताओं से संबंधित सही शब्द/शब्दों को रिक्त स्थानों में भरिये:

(i) कंपनी का निर्माण कानून के अंतर्गत होता है। इसीलिए कंपनी एक ..... होती है।

(ii) कंपनी की पूँजी की अविभाजित इकाई को ..... कहते हैं।

(iii) ..... कंपनी का अधिकृत हस्ताक्षर है।

(iv) अंशधारी कंपनी के कार्यों का प्रबंध करने के लिए अपनी इच्छा से कुछ व्यक्तियों को चुन लेते हैं। यह कंपनी का ..... लक्षण को बताता है।

II. सही कथनों के सामने (√) का निशान लगाकर तथा गलत कथनों के सामने (×) का निशान लगाकर पहचान कीजिए :

(i) कंपनी की संपत्ति अंशधारियों की संपत्ति होती है।

(ii) कंपनी के प्रत्येक सदस्य का दायित्व उसके द्वारा खरीदे गए अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित होता है।

(iii) कंपनी के सदस्य अपने अंशों का स्वतंत्रता से हस्तांतरण नहीं कर सकते।

(iv) एक कंपनी अपने नाम से अनुबंध कर सकती है।

टिप्पणी

26.2 कंपनियों के प्रकार

कंपनियों को निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है:

1. स्थापना के आधार पर
2. दायित्व के आधार पर
3. स्वामित्व के आधार पर

1. स्थापना के आधार पर

स्थापना के आधार पर कंपनियों को इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) संवैधानिक कंपनियाँ (Statutory Companies) : वह कंपनी जो किसी संसद अथवा राज्य विधान सभा के विशेष अधिनियम द्वारा स्थापित की जाती है संवैधानिक कंपनी कहलाती है। भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, भारतीय जीवन बीमा निगम, दिल्ली राज्य वित्त निगम, इसके कुछ उदाहरण हैं।

(ख) पंजीकृत कंपनी (Registered Company) : वह कंपनी जिसकी स्थापना एवं पंजीयन कंपनी अधिनियम, 1956 अथवा इससे पहले के कंपनी अधिनियम के अंतर्गत की गई है, पंजीकृत कंपनी कहलाती है। ऐसी कंपनियों के कार्य-कलाप कंपनी अधिनियम के प्रावधानों से व्यवस्थित होते हैं।

2. दायित्व के आधार पर

दायित्व के आधार पर कंपनियों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(क) अंशों द्वारा सीमित कंपनियाँ : ऐसी कंपनियों के सदस्यों का दायित्व उनके अंशों के अंकित मूल्य तक ही सीमित होता है।

(ख) गारंटी द्वारा सीमित कंपनी : ऐसी कंपनी के प्रत्येक अंशधारी का दायित्व कंपनी के समापन की स्थिति में उनके द्वारा स्वेच्छा से दी गई गारंटी तक सीमित होती है। यह दायित्व कंपनी के समापन के समय पैदा हो सकता है।

(ग) असीमित कंपनी (Unlimited Company) : जिस कंपनी के सदस्यों के दायित्व की कोई सीमा नहीं तय की जाती उसे असीमित कंपनी कहते हैं। ऐसी स्थिति में दायित्व अंशधारियों की व्यक्तिगत संपत्ति तक होता है। ऐसी कंपनियां अपने नाम के साथ 'लिमिटेड' शब्द का प्रयोग नहीं कर सकती।

(घ) 25 अनुभाग के अंतर्गत स्थापित कंपनी (Company Under Section 25) : अनुभाग 25 के अंतर्गत कंपनी की स्थापना कला, संस्कृति एवं सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है। ऐसी कंपनियों को अपने नाम के अंत में 'लिमिटेड' शब्द लगाने की आवश्यकता नहीं है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली चैम्बर ऑफ कॉमर्स, इनके उदाहरण हैं।

टिप्पणी

3. स्वामित्व के आधार पर

स्वामित्व के आधार पर कंपनियों को निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) निजी कंपनी (Private Company) : निजी कंपनी ऐसी कंपनी होती है जो अपने अंतर्नियमों के द्वारा :

(i) अपने सदस्यों के अंशों के हस्तांतरण के अधिकार पर प्रतिबंध लगाती है,

(ii) अपने सदस्यों की संख्या (अपने भूतपूर्व तथा वर्तमान कर्मचारियों को छोड़कर) 50 तक सीमित करती है,

(iii) सर्वसाधारण को अपने अंशों तथा ऋणपत्रों के खरीदने के लिए आमंत्रण पर प्रतिबंध लगाती है;

(iv) कंपनी की न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रुपये (₹ 1,00,000) होती है।

ऐसी कंपनी में न्यूनतम अंशधारियों की संख्या 2 होती है तथा कंपनी को अपने नाम के साथ 'प्राइवेट लिमिटेड' शब्द लगाना पड़ता है। निजी कंपनियों में आम जनता की भागीदारी नहीं होती।

(ख) सार्वजनिक कंपनी (Public Company) : वह कंपनी जो निजी कंपनी नहीं है सार्वजनिक कंपनी होती है। इसके अंतर्नियम उपरोक्त प्रतिबंध नहीं लगाते। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं :

(i) सदस्यों की न्यूनतम संख्या 7 है।

(ii) सदस्यों की अधिकतम संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

(iii) यह अपने अंशों को खरीदने के लिए सर्वसाधारण को आमंत्रित कर सकती है।

(iv) इसके अंश स्वतंत्रता से हस्तांतरणीय हैं।

(v) इसे अपने नाम के साथ 'लिमिटेड' शब्द जोड़ना पड़ता है।

(vi) इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी पाँच लाख रुपये (₹ 5,00,000) की होती है।

(ग) सरकारी कंपनी (Government Company) : एक सरकारी कंपनी वह कंपनी है जिसकी प्रदत्त पूंजी का 51% भाग (1) केंद्रीय सरकार; (2) राज्य सरकार; अथवा (3) अंशतः राज्य सरकार तथा अंशतः केंद्रीय सरकार इत्यादि के अधिकार में है।

सरकारी कंपनी के उदाहरण हैं हिंदुस्तान मशीन टूल्स लि. (HMT), राज्य व्यापार निगम (STC), मिनरल एंड मैटल ट्रेडिंग कार्पोरेशन (MMTC)।

(घ) विदेशी कंपनी (Foreign Company) : विदेशी कंपनी वह कंपनी है जिसका समामेलन भारत के बाहर तथा व्यापार का स्थान भारत में होता है, जैसे—फिलिप्स, एल.जी. आदि।

टिप्पणी

(ड़) धारक कंपनी एवं सहायक कंपनी (Holding Company and Subsidiary Company): एक धारक कंपनी वह कंपनी है जो अन्य किसी कंपनी (जिसे सहायक कंपनी कहते हैं) पर उसके आधे से अधिक समता अंशों का अधिग्रहण कर अथवा उसके निदेशकों के गठन पर नियंत्रण द्वारा अथवा किसी अन्य धारक कंपनी जो अन्य किसी कंपनी पर नियंत्रण रखती है।

सूचीबद्ध कंपनी एवं गैर सूचीबद्ध कंपनी (Listed Company and Unlisted Company)

एक कंपनी यदि अपनी प्रतिभूतियों को स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध करना चाहती है तो उसे स्टॉक एक्सचेंज में आवेदन करना होता है। जब यह उन प्रतिभूतियों के प्रवेश एवं उनमें लेन-देन के जारी रखने के लिए योग्य मान ली जाती है तो इसे सूचीबद्ध कंपनी कहते हैं। जिन कंपनियों की प्रतिभूतियाँ स्टॉक एक्सचेंज की सूची में सम्मिलित नहीं होती उन्हें गैर सूचीबद्ध कंपनी कहते हैं।

सार्वजनिक कंपनी तथा निजी कंपनी में अंतर

सार्वजनिक कंपनी तथा निजी कंपनी में प्रमुख अंतर निम्न हैं :

अंतर का आधार	*सार्वजनिक कंपनी*	*निजी कंपनी*
1. न्यूनतम सदस्यों की संख्या	कंपनी की स्थापना के लिए कम से कम सात सदस्यों की आवश्यकता होती है।	कंपनी की स्थापना के लिए कम से कम दो सदस्यों की आवश्यकता होती है।
2. अधिकतम सदस्यों की संख्या	अधिकतम सदस्यों की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है।	इसमें 50 से अधिक सदस्य नहीं हो सकते।
3. नाम	इसके नाम के साथ 'लिमिटेड' शब्द का प्रयोग होता है।	इसके नाम के अंत में 'प्राइवेट लिमिटेड' शब्द लिखा होता है।
4. व्यवसाय का प्रारंभ	यह अपना व्यवसाय, व्यवसाय प्रारंभ करने के प्रमाणपत्र प्राप्त करने के पश्चात् प्रारंभ कर सकती है।	यह अपना व्यवसाय, समामेलन का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के पश्चात् प्रारंभ कर सकती है।
5. सर्वसाधारण को आमंत्रण	यह अपने अंशों के खरीद के लिए सर्वसाधारण को आमंत्रित कर सकती है।	यह अपने अंशों के खरीदने के लिए सर्वसाधरण को आमंत्रित नहीं कर सकती।
6. अंशों का हस्तांतरण	इसके अंशों के हस्तांतरण पर कोई प्रतिबंध नहीं है।	इसके अंशों के हस्तांतरण पर प्रतिबंध है।

टिप्पणी

7. संचालकों की संख्या	इसके कम से कम तीन संचालक होने चाहिएँ।	इसके कम से कम दो संचालक होने चाहिएँ।
8. न्यूनतम पूँजी	इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी पाँच लाख रुपये (₹ 5,00,000) की होनी आवश्यक है।	इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रुपये (₹ 1,00,000) की होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 26.2

I. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों/अंकों में से सही शब्द/अंक रिक्त स्थानों में भरिये–

(i) सार्वजनिक कंपनी में सदस्यों की न्यूनतम संख्या ..... हैं।
(दो, पाँच, सात)

(ii) सरकारी कंपनी में प्रदत्त पूंजी का 51% से ..... भाग सरकार के पास होता है। (कम, अधिक)

(iii) निजी कंपनी की न्यूनतम प्रदत्त पूँजी ..... रुपये होती है।
(एक लाख, पाँच लाख, दस लाख)

(iv) एक विदेशी कंपनी वह होती है जिसका समामेलन ..... किया जाता है। (भारत में, भारत से बाहर)

II. निम्न में कंपनी के प्रकार के नाम बताइये:

(i) जो अपने अंतर्नियमों के द्वारा अपने अंशों के हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाती है।

(ii) कंपनी जिसके सदस्यों का दायित्व इसके अंशों की अदत्त राशि तक सीमित है।

(iii) एक कंपनी जो संसद अथवा राज्य विधान सभा के विशेष अधिनियम से स्थापित होती है।

(iv) कंपनी जिसके सदस्यों का दायित्व असीमित होता है।

(v) कंपनी जो किसी अन्य कंपनी पर नियंत्रण रखती है।

26.3 अंश–अर्थ एवं प्रकार

एक संयुक्त पूँजी कंपनी अपनी पूँजी को समान मूल्य की इकाइयों में विभक्त करती है। प्रत्येक इकाई को अंश कहते हैं। पूँजी एकत्रित करने के लिए इन इकाइयों/अंशों को बिक्री के लिए लाया जाता है। इसे अंशों का निर्गमन करना कहते हैं। जो व्यक्ति कंपनी के अंश/अंशों का क्रय करता है उसे अंशधारी कहते हैं तथा कंपनी के अंश/अंशों को प्राप्त करने पर वह कपंनी के स्वामियों में से एक बन जाता है।

इस प्रकार से अंश, पूँजी की अविभाज्य इकाई होता है। यह कंपनी एवं अंशधारी के बीच स्वामित्व का संबंध स्थापित करता है। इसका अंकित मूल्य ही इसका सम मूल्य होता है। कंपनी की समस्त पूँजी को अनेक अंशों में विभक्त कर दिया जाता है।

अंशों के प्रकार

कंपनी अधिनियम के अनुसार, कंपनी निम्न प्रकार के अंश जारी कर सकती है—

(i) पूर्वाधिकार अंश (Preference Shares) (ii) समता अंश (Equity shares)

(i) पूर्वाधिकार अंश : पूर्वाधिकार अंश वह अंश है जिसके अंशधारियों को समता अंशधारियों की तुलना में निम्न के संबंध में पूर्वाधिकार प्राप्त होते हैं—

- लाभांश का भुगतान,
- कंपनी के समापन के समय पूँजी का भुगतान

पूर्वाधिकारी अंशों की विशेषताएँ

i. पूर्वाधिकारी अंशधारियों को लाभांश का भुगतान, समता अंशों से पहले किया जाता है।

ii. इन अंशों पर लाभांश की दर पूर्व निर्धारित होती है।

(ii) समता अंश : वे समस्त अंश जो पूर्वाधिकारी अंश नहीं हैं समता अंश हैं। इन अंशों के धारक कंपनी के लाभ में से पूर्वाधिकारी अंशधारियों को भुगतान के पश्चात लाभांश प्राप्त करते हैं।

समता अंशधारियों को कपंनी के संचालकों को चुनने का अधिकार है। समता अंश पूँजी के स्थाई स्रोत होते हैं।

समता अंशों की विशेषताएँ

i. समता अंशों पर लाभांश की दर वर्ष प्रति वर्ष परिवर्तित हो सकती है।

ii. पूर्वाधिकारी अंशधारियों को लाभांश के भुगतान के बाद ही समता अंशों पर लाभांश का भुगतान किया जाता है।

iii. कंपनी के समापन की दशा में समता अंशधारियों की पूँजी सबसे अंत में लौटाई जाती है।

iv. समता अंशधारी कंपनी के वास्तविक स्वामी होते हैं।

टिप्पणी

पूर्वाधिकार अंशों तथा समता अंशों में अंतर

अंतर का आधार	समता अंश	पूर्वाधिकार अंश
1. लाभांश की दर	इन अंशों पर लाभांश की दर निश्चित नहीं होती है तथा यह निदेशक मंडल के निर्णय पर निर्भर करता है।	इन अंशों पर स्थायी दर से लाभांश प्राप्त होता है।
2. लाभांश का भुगतान	पूर्वाधिकार अंशधारियों को लाभांश का भुगतान करने के पश्चात् लाभांश दिया जाता है।	इन अंशों पर लाभांश का भुगतान समता अंशधारियों को भुगतान के पूर्व होता है।
3. कंपनी के समापन पर अंशपूंजी की वापसी	कंपनी के समापन की स्थिति में समता अंशधारियों की पूँजी वापसी पूर्वाधिकार अंशधारियों के पश्चात् ही होती है।	कंपनी के समापन की स्थिति में पूर्वाधिकारी अंशधारकों को अंश पूँजी वापसी का समता अंशधारकों से पूर्वाधिकार होता है।
4. मतदान का अधिकार	अंशधारियों को मत का अधिकार होता है।	केवल विशेष परिस्थितियों में ही पूर्वाधिकारी अंशधारियों को मत का अधिकार होता है।
5. शोधन (Redemption)	समता अंशों का शोधन कंपनी के जीवनकाल में नहीं किया जाता है।	पूर्वाधिकार अंशों का शोधन निर्गमन की शर्तों के अनुसार किया जाता है।

उदाहरण 1

आलोक लिमिटेड ने ₹ 10 प्रत्येक वाले 12,000 अंश निर्गमित किए। आवेदन पर ₹ 2, आबंटन पर ₹ 4 एवं प्रथम व अंतिम मांग पर ₹ 4 धनराशि देय थी। सभी अंश अभिदत्त हुए तथा देय तिथियों पर सभी मांगें प्राप्त हुईं। कंपनी की बहियों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (अंश आवेदन राशि की प्राप्ति)		24,000	24,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते में हस्तांतरण)		24,000	24,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आबंटन राशि देय हुई)		48,000	48,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		48,000	48,000
	अंश प्रथम व अंतिम मांग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (प्रथम व अंतिम मांग राशि देय हुई)		48,000	48,000
	बैंक खाता नाम अंश प्रथम व अंतिम मांग खाते से (प्रथम व अंतिम मांग राशि प्राप्त हुई)		48,000	48,000

पाठगत प्रश्न 26.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए :

i. एक कंपनी में .... वित्त का मुख्य साधन है।

ii. .... पूँजी की अविभाजित इकाई होता है।

iii. .... को कंपनी के संचालकों को चुनने का अधिकार है।

iv. .... को .... की तुलना में कंपनी के समापन पर पूँजी की वापसी के भुगतान का पूर्वाधिकार होता है।

टिप्पणी

26.4 अंश पूँजी–अर्थ एवं प्रकार

एक संयुक्त पूँजी कंपनी अपनी पूँजी की अधिकतम आवश्यकताओं का अनुमान लगा लेती है। इस पूँजी की राशि का कंपनी रजिस्ट्रार के पास पंजीकृत कंपनी के सीमानियम की पूँजी की धारा में उल्लेख किया जाता है। कुल पूँजी को निश्चित राशि की छोटी अविभाजित इकाइयों में बाँट दिया जाता है तथा प्रत्येक इकाई को अंश कहते हैं। एक अंश कंपनी की पूँजी में हिस्सा होता है, क्योंकि कंपनी की पूँजी को अंशों में विभक्त कर दिया जाता है इसलिए कंपनी की पूँजी को अंश पूँजी कहते हैं। कंपनी की अंश पूँजी को निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जाता है :

- **नाम मात्र/अधिकृत/पंजीकृत पूँजी (Nominal/Authorised/Registered Capital) :** यह अंश पूँजी की वह अधिकतम राशि है जिसके निर्गमन के लिये कंपनी का उद्देश्य पत्र उसे अधिकृत करता है।
- **निर्गमित पूँजी (Issued Capital) :** निर्गमित पूँजी अधिकृत पूँजी का वह भाग होती है जिसे कंपनी जन साधारण को बिक्री करना चाहती है जिनमें अभिदान अथवा क्रय के लिए लोग सम्मिलित होते हैं। कंपनी अपनी पूरी अधिकृत पूँजी का एक बार में निर्गमन कर सकती है या फिर इसे हिस्सों में समय–समय पर कंपनी की आवश्यकतानुसार निर्गमन कर सकती है। इसका अभिप्राय है कि इसमें कपंनी द्वारा निर्गमित अंशों का अंकित मूल्य सम्मिलित होता है जो कि (क) नकद एवं (ख) रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले (i) कंपनी के प्रवर्तकों को एवं (ii) अन्य लोगों को निर्गमित किये गये हैं।
- **अभिदान पूँजी (Subscribed Capital) :** निर्गमित पूँजी का यह वह भाग है जिसे वह लोग खरीदते हैं जिनको इसकी प्रस्तावना की जाती है। कंपनी निर्गमित अंशों के बराबर या उनसे अधिक अथवा कम के लिए आवेदन प्राप्त कर सकती है। निर्गमित अंश पूँजी के नामित मूल्य का वह भाग जिसके अंशधारी वास्तव में भुगतान करते हैं (अथवा अभिदान करते हैं) अभिदान पूँजी का भाग होती है।
- **याचित पूँजी (Called up Capital) :** यह निर्गमित पूँजी/अभिदान पूँजी का वह भाग होती है जिसके कंपनी अंशों के आबंटन पर भुगतान के लिए याचना करती है तथा जिसका भुगतान करने के लिए अंशधारी बाध्य होते हैं। अंशों के निर्गमित मूल्य का वह भाग जिसकी कंपनी ने अंशधारियों से याचना की है उसे याचित पूँजी कहते हैं।
- **अयाचित पूँजी (Uncalled Capital) :** अयाचित पूँजी निर्गमित/अभिदान पूँजी का वह भाग होती है जिसकी आबंटित अंशों पर कंपनी ने याचना नहीं की है।
- **प्रदत्त पूँजी (Paid up Capital) :** याचित पूँजी का वह भाग जिसका अंशधारियों ने भुगतान कर दिया है प्रदत्त पूँजी कहलाती है। किश्तों की अदत्त राशि को याचित पूँजी में से घटा दिया जाता है।

टिप्पणी

- **अदत्त पूँजी (Unpaid Capital) :** याचित पूँजी का वह भाग जिसे मांग लिया गया है लेकिन जिसका अंशधारियों ने अभी भुगतान नहीं किया है। अदत्त पूँजी अर्थात् शेष याचना कहलाती है।
- **संचित पूँजी (Reserve Capital) :** कंपनी अपनी पूँजी का एक भाग अयाचित रख सकती है तथा उसे संचित कर सकती है जिसे वह कंपनी के समापन के समय आवश्यकता पड़ने पर माँगती है। इसे संचित पूँजी कहते हैं। इसके लिए कंपनी को एक विशेष प्रस्ताव पारित करना होता है। अतः यह अयाचित पूँजी का वह भाग होती है कंपनी ने जिसको कंपनी के समापन पर ही माँगने का निर्णय लिया है।

पाठगत प्रश्न 26.4

I. उचित शब्द/शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अंश पूँजी पूँजी की वह राशि होती है जिसे ..... के द्वारा एकत्रित किया जाता है।

(ii) पूँजी, जिसका उल्लेख सीमानियम की पूँजी की धारा में किया जाता है, को ..... कहते हैं।

(iii) अधिकृत पूँजी का वह भाग, जिसके अभिदान हेतु प्रस्तावना जन साधारण को की जाती हैं..... कहलाती है।

(iv) अयाचित पूँजी का वह भाग जिसे संचय में रखा जाता है तथा जिसे केवल कंपनी के समापन पर ही मांगा जाता है ..... कहलाती है।

II. निम्नलिखित कथनों में सही के लिए 'सही' तथा गलत के लिए 'गलत' शब्द लिखिए।

(i) अभिदान पूँजी, निर्गमित पूँजी के या तो बराबर होती है या फिर उससे कम।

(ii) निर्गमित पूँजी सीमानियम के पूँजी अनुभाग में दिखाई जाती है।

(iii) एक अंशधारी का दायित्व अंश के अंकित मूल्य तक सीमित होता है।

(iv) संचित पूँजी की याचना कंपनी कभी भी कर सकती है।

26.5 अंशों का निजी आधार पर निर्गमन

कंपनी अधिनियम, 1956 के अनुसार धारा 81(1ए) के अनुसार, अंशों के निजी आधार पर निर्गमन का अर्थ है व्यक्तियों के चयनित समूह को अंशों का आबंटन करना।

अंशों द्वारा सीमित निजी कंपनी को कंपनी अधिनियम द्वारा सार्वजनिक अभिदान हेतु अंशों के निर्गमन से प्रतिबंधित किया गया है। इसे स्थानापन्न प्रविवरण जमा कराने

टिप्पणी

की भी आवश्यकता नहीं है। इसके अंश बहुत कम व्यक्तियों को, जिन्हें प्रवर्तक कहा जाता है या उनके पारिवारिक संपर्कों से संबंधित होते हैं, निजी तौर पर निर्गमित किए जाते हैं। पूँजी जुटाने का यह एक सरल तरीका है, जिसमें बहुत कम वैधानिक औपचारिकताएँ आवश्यक होती हैं। यद्यपि, एक सार्वजनिक कंपनी भी अभिदान हेतु जनता को आमंत्रित किए बिना ही निजी आधार पर अंशों का निर्गमन कर सकती है। इस प्रकार के निजी आबंटन हेतु कंपनी द्वारा विशेष प्रस्ताव पारित करने तथा केन्द्रीय सरकार की सहमति की आवश्यकता होती है। अभिगोपक अथवा ब्रोकर उन ग्राहकों को खोजते हैं जो अंश क्रय करना चाहते हैं। क्योंकि सार्वजनिक आमंत्रण इसमें संलिप्त नहीं है, इसलिए प्रविवरण जारी करना आवश्यक नहीं होता। ऐसे मामले में कंपनी पंजीयक के कार्यालय में स्थानापन्न प्रविवरण जमा कराना चाहिए।

निजी तौर पर अंशों के आबंटन का लेखांकन व्यवहार बिल्कुल वैसा ही है जैसा सार्वजनिक अभिदान में होता है।

निजी तौर पर अंश आबंटन की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

i. कंपनी को प्रविवरण के स्थान पर स्थानापन्न प्रविवरण बनाकर, अंशों अथवा ऋणपत्रों के आबंटन से न्यूनतम 3 दिन पूर्व पंजीयक के कार्यालय में जमा कराना आवश्यक है।

ii. निजी तौर पर अंशों तथा ऋणपत्रों का निर्गमन केवल तभी किया जा सकता है, जब कंपनी सार्वजनिक अभिदान के माध्यम से पूँजी नहीं जुटाना चाहती।

iii. अंशों के निजी तौर पर आबंटन के आबंटी अपने अंशों को आबंटन से न्यूनतम 3 वर्ष तक बेच नहीं सकते। इस अवधि को प्रतिबंधित अवधि कहा जाता है।

उदाहरण 2 (न्यून अभिदान)

सुकृति लिमिटेड ₹ 10,000 की पूँजी, जो ₹ 10 प्रत्येक वाले अंशों में बँटी हुई है, के साथ पंजीकृत हुई। कंपनी ने 60,000 अंशों को जारी करने हेतु आमंत्रण दिया तथा धनराशि इस प्रकार देय थी :

आवेदन पर	₹ 3;
आबंटन पर	₹ 2;
मांग पर	₹ 5

55,000 अंशों हेतु आवेदन प्राप्त हुए, जो आबंटित कर दिए गए। देय तिथियों पर संपूर्ण राशि प्राप्त हुई। सुकृति लिमिटेड की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

टिप्पणी

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (आवेदन राशि प्राप्त हुई)		1,65,000	1,65,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते से हस्तांतरण)		1,65,000	1,65,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आबंटन राशि देय हुई)		1,10,000	1,10,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		1,10,000	1,10,000
	अंश मांग खाता नाम अंश पूँजी खाते से (मांग राशि देय हुई)		2,75,000	2,75,000
	बैंक खाता नाम अंश मांग खाते से (मांग राशि प्राप्त हुई)		2,75,000	2,75,000

उदाहरण 3 (अधि-अभिदान)

₹ 10 प्रत्येक वाले 10,000 समता अंशों हेतु जनता को आमंत्रण देने हेतु भिवानी लिमिटेड ने प्रविवरण जारी किया। धनराशि इस प्रकार देय थी :

आवश्यकता पर ₹ 2; आबंटन पर ₹ 3 तथा शेष राशि आवश्यकता पड़ने पर मांगी जाएगी।

12,000 अंशों हेतु आवेदन प्राप्त हुए तथा आबंटन इस प्रकार किया गया :

8,000 अंशों के आवेदनों पर पूर्ण आबंटन

3,000 अंशों के आवेदनों पर 2,000 अंश

1,000 अंशों के आवेदनों पर कोई आबंटन नहीं

यह मानते हुए कि आबंटन राशि प्राप्त हो गई है तथा कोई मांग राशि नहीं मांगी गई है, कंपनी की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
	बैंक खाता नाम अंश आवेदन खाते से (12,000 अंशों पर ₹ 2 प्रत्येक की दर से आवेदन राशि प्राप्त हुई)		24,000	24,000
	अंश आवेदन खाता नाम अंश पूँजी खाते से अंश आबंटन खाते से बैंक खाते से (आवेदन राशि का अंश पूँजी खाते तथा अंश आबंटन खाते में हस्तांतरण तथा शेष राशि की वापसी)		24,000	20,000 2,000 2,000
	अंश आबंटन खाता नाम अंश पूँजी खाते से (आबंटन राशि देय हुई)		30,000	30,000
	बैंक खाता नाम अंश आबंटन खाते से (आबंटन राशि प्राप्त हुई)		28,000	28,000

पाठगत प्रश्न 26.5

बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य :

i. संयुक्त पूँजी कंपनी एक कृत्रिम व्यक्ति है, जिसका निर्माण कानून द्वारा होता है।

ii. कंपनी के अंशधारकों का दायित्व असीमित होता है।

iii. संयुक्त पूँजी कंपनी का पंजीकरण आवश्यक नहीं है।

iv. पूर्वाधिकारी अंशधारियों को समता अंशधारियों के बाद लाभांश का भुगतान किया जाता है।

टिप्पणी

टिप्पणी

26.6 रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन

कंपनी, विक्रेताओं से कुछ विशिष्ट संपत्तियाँ उधार खरीदती है। क्रय की गई संपत्तियों के प्रतिफल के भुगतान स्वरूप रोकड़ देने के बजाय कंपनी विक्रेताओं को निर्धारित संख्या में अपने अंश निर्गमित कर देती है। विक्रेताओं को अंश सममूल्य पर, अधिलाभ पर अथवा बट्टे पर जारी किए जा सकते हैं। ऐसे मामलों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ निम्न प्रकार से होती हैं :

संपत्तियाँ क्रय करने पर

विशिष्ट सम्पत्ति/विविध संपत्तियाँ नाम
  विक्रेता खाते से
(उधार संपत्तियाँ क्रय की गई)

विक्रेताओं को अंश जारी करने पर

सममूल्य पर

विक्रेता नाम
  अंश पूँजी खाते से
(विक्रेता को ..... अंश ₹ ..... की दर से निर्गमित किए गए)

अधिलाभ पर

विक्रेता नाम
  अंश पूँजी खाते से
  प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाते से
(विक्रेता को ..... अंश ₹ ..... (₹ ..... अधिलाभ सहित)
की दर से निर्गमित किए गए)

बट्टे पर

विक्रेता नाम
अंश निर्गमन पर बट्टा खाता नाम
  अंश पूंजी खाता से
(विक्रेता को ..... अंश ₹ ..... प्रत्येक वाले
₹ ..... के बट्टे पर निर्गमित किए गए)

उदाहरण 4 (रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन)

हिन्दुस्तान लिमिटेड ₹ 5,00,000 की अंश पूँजी, जो ₹ 100 वाले समता अंशों में बँटी हुई थी। निम्नलिखित मामलों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

टिप्पणी

(क) कंपनी ने ₹ 1,50,000 से राम एंड कंपनी का व्यवसाय क्रय किया, जिसके भुगतान स्वरूप ₹ 20,000 रोकड़ दिए तथा शेष के ₹ 100 वाले समता अंश निर्गमित किए।

(ख) कंपनी ने भवन क्रय किया तथा क्रय प्रतिफल के रूप में ₹ 100 वाले 2,000 समता अंश निर्गमित किए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(क)	विविध संपत्तियाँ खाता नाम राम एंड कंपनी के खाते से (राम एंड कंपनी से व्यवसाय क्रय किया)		1,50,000	1,50,000
	राम एंड कंपनी नाम बैंक खाते से समता अंश पूँजी खाते से (राम एंड कंपनी को भुगतान स्वरूप ₹ 20,000 रोकड़ तथा ₹ 100 वाले 1,300 समता अंश जारी किए)		1,50,0.00	20,000 1,30,000
(ख)	भवन खाता नाम विक्रेता के खाते से (भवन उधार क्रय किया)		2,00,000	2,00,000
	विक्रेता का खाता नाम समता अंश पूँजी खाते से (₹ 100 वाले 2,000 अंश विक्रेता को निर्गमित किए)		2,00,000	2,00,000

उदाहरण 5

सिमरन लिमिटेड ने चारू लिमिटेड से ₹ 99,000 की संपत्तियाँ क्रय कीं। क्रय प्रतिफल के रूप में सिमरन लिमिटेड के समता अंश जारी करने पर सहमति हुई। निम्नलिखित मामलों में आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

i. ₹ 10 वाले अंश सममूल्य पर जारी किए गए।

ii. ₹ 10 वाले अंश 10% अधिलाभ पर जारी किए गए।

iii. ₹ 10 वाले अंश 10% बट्टे पर जारी किए गए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(i)	विविध संपत्तियाँ खाता नाम		99,000	
	चारू लिमिटेड से			99,000
	(चारू लिमिटेड से संपत्तियाँ क्रय की)			
	चारू लिमिटेड नाम		99,000	
	समता अंश पूँजी खाते से			99,000
	(क्रय प्रतिफल के रूप में ₹ 10 वाले 9,900 समता अंश जारी किए)			
(ii)	चारू लिमिटेड नाम		99,000	
	समता अंश पूंजी खाते से			90,000
	प्रतिभूति अधिलाभ संचय खात से			9,000
	(₹ 10 वाले 9,000 समता अंश 10% अधिलाभ पर निर्गमित किए)			
(iii)	चारू लिमिटेड नाम		99,000	
	समता अंश निर्गमन पर बट्टा खाता नाम		11,000	
	समता अंश पूंजी खाते से			1,10,000
	(₹ 10 वाले 11,000 समता अंश 10% बट्टे पर निर्गमित किए)			

कार्यप्रणाली टिप्पणी

(i) अंशों की संख्या $= \frac{99,000}{10} = 9,900$ अंश

(ii) अंशों की संख्या $= \frac{99,000}{11} = 9,000$ अंश

(iii) अंशों की संख्या = $\frac{99,000}{9}$ = 11,000 अंश

26.7 प्रवर्तकों को अंशों का निर्गमन

टिप्पणी

प्रवर्तक, वे व्यक्ति, फर्में अथवा कंपनियाँ हैं जो कंपनी का प्रवर्तन करते/करती हैं। ये कंपनी निर्माण संबंधी कार्य में संलग्न रहते हैं। प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं के बदले पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है। इस पारिश्रमिक का भुगतान अंशों के रूप में भी किया जा सकता है। ऐसे मामलों में कंपनियाँ अपने प्रवर्तकों को बिना किसी भुगतान के अंश जारी करती हैं। निम्न प्रकार से रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है:

ख्याति खाता नाम
अंश पूंजी खाते से

ख्याति खाते को यह मानकर नामित किया जाता है कि प्रवर्तकों के कार्य के परिणामस्वरूप कंपनी, लाभदायक इकाई बन गई है।

वैकल्पिक रूप से, रूढ़िवादी व्यवहार इस प्रकार है :

प्रारंभिक व्यय/समामेलन लागत खाता नाम
अंश पूँजी खाते से

प्रारंभिक व्यय/समामेलन लागत खाते को, जितना शीघ्र संभव हो, लाभ–हानि विवरण में अपलिखित कर दिया जाता है।

उदाहरण 6 (रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन)

ABC लिमिटेड ₹ 10,00,000 की नामित पूँजी, जो ₹ 10 वाले समता अंशों में बँटी थी, के साथ पंजीकृत हुई। कंपनी ने XYZ लिमिटेड से ₹ 27,000 की मशीनरी क्रय की तथा दावे के संतुष्टिकरण में ₹ 10 वाले पूर्णदत्त समता अंश जारी किए। प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं हेतु ₹ 10,000 के समता अंश जारी किए गए।

उपर्युक्त लेनदेनों के लिए रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए। यदि XYZ लिमिटेड को जारी अंश :

(i) सममूल्य पर हों।

(ii) 20% अधिलाभ पर हों।

(iii) 10% बट्टे पर हों।

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
(क)	**मशीनरी क्रय करने पर :**			
	मशीनरी खाता नाम		27,000	
	XYZ लिमिटेड से			27,000
	(XYZ लिमिटेड से मशीनरी क्रय की)			
(i)	**यदि अंश सममूल्य पर हों :**			
	XYZ लिमिटेड नाम		27,000	
	अंश पूँजी खाते से			27,000
	(₹ 10 वाले 2,700 अंश XYZ लिमिटेड को सममूल्य पर निर्गमित किए)			
(ii)	**यदि अधिलाभ पर अंश जारी हों :**			
	XYZ लिमिटेड नाम		27,000	
	अंश पूँजी खाते से			22,500
	प्रतिभूति अधिलाभ संचय खाते से			4,500
	(₹ 10 वाले 2,250 अंश 20% अधिलाभ पर जारी किए गए)			
	अंशों की संख्या = 27,000 ÷ 12 = 2,250			
(iii)	**यदि बट्टे पर अंश जारी हों :**			
	XYZ लिमिटेड नाम		27,000	
	अंश निर्गमन पर बट्टा खातानाम		3,000	
	अंश पूँजी खाते से			30,000
	(₹ 10 वाले 3,000 अंश 10% बट्टे पर जारी किए गए)			
	अंशों की संख्या = 27,000 9 = 3,000			

(ख)	**प्रवर्तकों को अंश निर्गमन पर** ख्याति खाता नाम अंश पूँजी खाता से (प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं के प्रतिफलस्वरूप समता अंश जारी किए गए)		10,000	10,000

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 26.6

बहुविकल्पीय प्रश्न

i. जब विक्रेता को सम्पत्ति क्रय के प्रतिफल स्वरूप सममूल्य पर अंश जारी किए जाते हैं तो अंशों का कुल मूल्य होगा :

(क) क्रय प्रतिफल से अधिक (ख) क्रय प्रतिफल से कम

(ग) क्रय प्रतिफल के समान (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

ii. जब विक्रेताओं को सम्पत्ति के क्रय के प्रतिफल स्वरूप अधिलाभ पर अंश जारी किए जाते हैं तो अंशों का कुल मूल्य होगा :

(क) क्रय प्रतिफल के समान (ख) क्रय प्रतिफल से अधिक

(ग) क्रय प्रतिफल से कम (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

iii. जब विक्रेताओं को सम्पत्ति के क्रय के प्रतिफल स्वरूप बट्टे पर अंश जारी किए जाते हैं तो अंशों का कुल मूल्य होगा :

(क) क्रय प्रतिफल से कम (ख) क्रय प्रतिफल से अधिक

(ग) क्रय प्रतिफल के समान (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

आपने क्या सीखा

- कंपनी कुछ व्यक्तियों का एक संगठन होती है जो इसकी पूँजी जुटाते हैं तथा कंपनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत जिसका पंजीयन कराया जाता है।
- कंपनी की विशेषताएँ

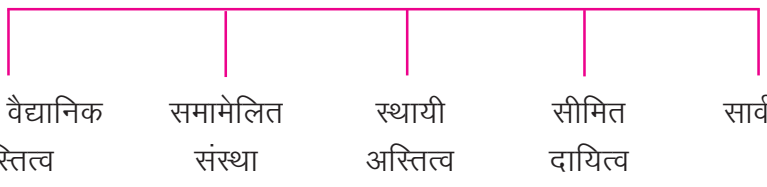

- कंपनी के प्रकार

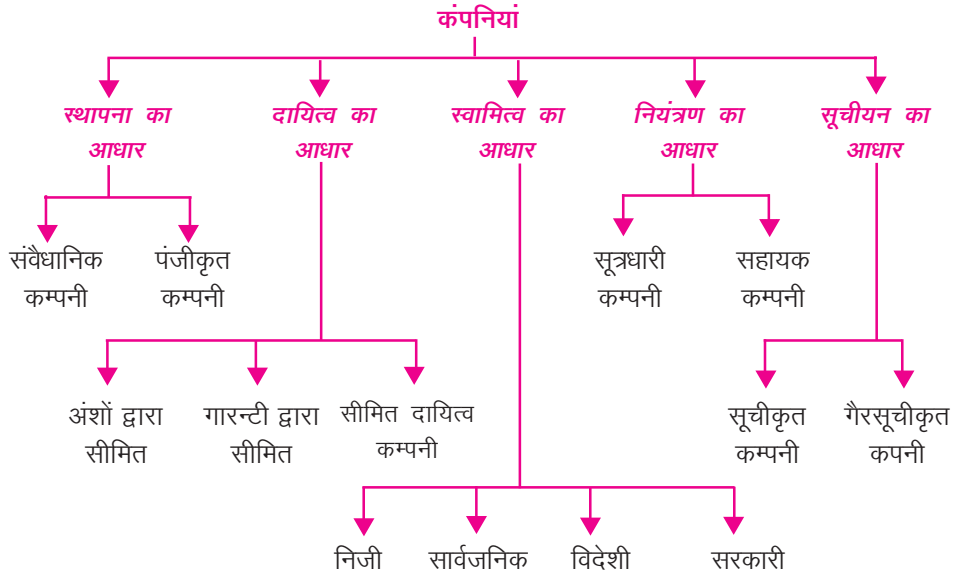

- निजी कम्पनी वह कम्पनी होती है जिसके अन्तर्नियम
  (i) सदस्यों की अधिकतम सीमा पचास तक सीमित रखते हैं।
  (ii) अंशों के हस्तांतरण पर रोक लगाते हैं।
  (iii) जन साधारण को अंशों का क्रय करने के लिए आमंत्रण पर रोक लगाते हैं।
  (iv) इन कंपनियों की न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रुपये होती है।
- निजी कंपनी को अपने नाम के साथ प्राइवेट लिमिटेड शब्द लगाना अनिवार्य है।
- जो कंपनियाँ निजी कंपनी नहीं होती वह सार्वजनिक कंपनी होती हैं।
- कंपनी अंशों का निर्गमन कर पूँजी एकत्रित करती है।
- अंश दो प्रकार के होते हैं—समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंश; पूर्वाधिकार अंशों को अन्य अंशों पर लाभांश एवं कंपनी के समापन की स्थिति पर पूँजी की वापसी का पूर्वाधिकार होता है। पूर्वाधिकार अंशों को छोड़कर अन्य अंशों को समता अंश कहते हैं।
- अंश पूँजी एवं इसके प्रकार : नाममात्र अधिकृत; निर्गमित; अभिदान; याचित; गैरयाचित प्रदत्त; अदत्त; संचित।
- **अंश :** अंश पूँजी के एक विशिष्ट भाग पर अधिकार को अंश कहते हैं।
- **अंशों के प्रकार :** समता अंश तथा पूर्वाधिकारी अंश।
- संपत्तियाँ क्रय करने पर विक्रेताओं को क्रय प्रतिफल के भुगतान स्वरूप अंश जारी किए जा सकते हैं। ऐसे अंश सममूल्य पर, अधिलाभ पर अथवा बट्टे पर निर्गमित किए जा सकते हैं।

टिप्पणी

- जब अंश कुछ चयनित लोगों के समूह को (बिना प्रविवरण जारी किए) निर्गमित किए जाते हैं तो इसे निजी आधार पर अंशों का निर्गमन कहते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. कंपनी की परिभाषा दीजिए। इसकी विशेषताओं को समझाइए।
2. पूर्वाधिकार अंश क्या हैं? समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंशों में अंतर कीजिए।
3. निजी कंपनी पर लगे प्रतिबंधों को सूचीबद्ध कीजिए। सार्वजनिक कंपनी एवं निजी कंपनी में अंतर कीजिए।
4. अंश पूँजी किसे कहते हैं? पूँजी के विभिन्न प्रकार को समझाइए।
5. कंपनी के विभिन्न प्रकारों को समझाइए।
6. एक संयुक्त पूँजी कंपनी का क्या अर्थ है?
7. एक कंपनी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
8. समता अंशों की विशेषताएँ बताइए।
9. निजी आधार पर अंशों के निर्गमन से क्या अभिप्राय है?
10. निजी आधार पर अंशों के निर्गमन की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
11. समता अंशों तथा पूर्वाधिकारी अंशों में अंतर्भेद कीजिए।
12. विक्रेताओं को अंश जारी करने का क्या तात्पर्य है?
13. प्रवर्तकों को अंश जारी करने का क्या अभिप्राय है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1 I. (i) कृत्रिम व्यक्ति, (ii) अंश
(iii) सार्वमुद्रा (iv) प्रतिनिधित्व

II. (i) × (ii) √ (iii) × (iv) √

26.2 I. (i) सात (ii) 51% (iii) एक लाख (iv) भारत से बाहर

II. (i) निजी (ii) अंशों द्वारा सीमित कंपनी
(iii) सरकारी कंपनी (iv) असीमित दायित्व की कंपनी
(v) सूत्रधारी कंपनी

टिप्पणी

26.3 (i) अंश पूँजी, (ii) अंश,
(iii) समता अंशधारक (iv) पूर्वाधिकार अंश धारक, समता अंशधारक

26.4 I. (i) अंशों का निर्गमन (ii) अधिकृत पूँजी
(iii) निर्गमित पूँजी (iv) संचित पूँजी

II. (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत

26.5 (i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

26.6 (i) ग (ii) क (iii) ख

क्रियाकलाप

आपके पिता एक कंपनी के अंशधारी हैं। हर वर्ष वे कंपनी से रिपोर्ट प्राप्त करते हैं। यह रिपोर्ट वार्षिक रिपोर्ट के नाम से जानी जाती है इस रिपोर्ट को देखने के प्श्चात, निम्न को ज्ञात करें :

1. कंपनी के नाम के साथ सीमित/निजी सीमित
2. पूँजी के प्रकार
   - (क) अधिकृत (authorised) .....
   - (ख) निर्गमित (Issued) .....
   - (ग) याचित (Called up) .....
   - (घ) शेष याचना (Call in Arrears) .....
   - (ड़) संचित पूँजी (Reserved) .....